मार्च: 2025 वर्ष : 8 अंक : 6

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, मार्च 2025 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सबसे पहले मैं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च 2025) पर समस्त महिलाओं को हार्दिक बधाई देता हूँ।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पूरे विश्व में 8 मार्च को मनाया जाता है। यह एक ऐसा दिन है, जब महिलाओं को राष्ट्रीय, जातीय, भाषाई, सांस्कृतिक, आर्थिक, या राजनीतिक स्तर पर उनकी उपलब्धियों के लिए पहचाना जाता है। यह अतीत के संघर्षों और उपलब्धियों को देखने का अवसर है। महिला दिवस को मनाने की शुरुआत अमरीका के न्यूयॉर्क शहर में वर्ष 1908 में महिला मजदूर आंदोलन से हुआ था। लगभग 15 हज़ार महिलाओं ने इसमें हिस्सा लिया था और बराबरी के अधिकार की मांग की थी, जिसमें कार्य अवधि को कम करने, अच्छा वेतन और वोटिंग के अधिकार के मुद्दे विशेष थे। पहला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस साल 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटज़रलैंड में मनाया गया था। लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इसे औपचारिक मान्यता वर्ष 1975 में मिली और 8 मार्च को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में घोषित किया गया। वर्ष 2025 के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का थीम है - # Accelerate Action # अर्थात महिलाओं को लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता के लिए कार्य करना चाहिए ।

मार्च का महीना हमारे संस्थान के लिए भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है हमारे संस्थान की स्थापना देश के स्वाधीनता वर्ष, 1947 में 17 मार्च को ही हुआ था। सिफ़री अपने इस 78 वर्ष में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में अनगिनत उपलब्धियों के साथ-साथ मछुआरों की आर्थिक-सामाजिक विकास के लिए सदैव तत्पर रहा है। प्राकृतिक आपदा के समय संस्थान मछुआरों की आर्थिक सहायता तथा आदान वितरण कर उनकी सहायता की है। संस्थान ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए भी बहुत से कदम उठाया है। अतः मैं आप सभी संस्थान कर्मियों को हमारे स्थापना दिवस (17 मार्च) की हार्दिक शुभकामानाएँ देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

आर्द्रभूमियों के संरक्षण के लिए विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2025

जल शोधन, जैव विविधता संरक्षण, मछली उत्पादन, और जल आपूर्ति सहित कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करने में आर्द्रभूमि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो पारिस्थितिक संतुलन, जीवन और आजीविका में सुधार में इसकी भूमिका को उजागर करती हैं। मानवजनित गतिविधियों, जलवायु परिवर्तन, और अन्य कारकों के कारण भारत की कई आर्द्रभूमियों में पर्यावरणीय स्थिति तेजी से कमजोर हो रही है। आर्द्रभूमि से जुड़े मछुआरों जैसे जमीनी स्तर पर हितधारकों की भागीदारी के साथ इस महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और संरक्षित करने का प्रयास करना आवश्यक है। आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 2 फरवरी 2025 को "विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2025" समारोह के अवसर एक थीम यानी “हमारे साझा भविष्य के लिए आर्द्रभूमियों की रक्षा” के साथ कार्यक्रम का आयोजन सगुना यूनियन फिशरमैन कोऑपरेटिव सोसाइटी, कांतागंज, नादिया के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम के दौरान, सिफरी के प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख, जलाशय और वेटलैंड डिवीजन डॉ. रंजन के. मन्ना ने निदेशक, डॉ. बसंत के. दास के नेतृत्व में संस्थान की विभिन्न गतिविधियों का वर्णन किया। उन्होंने

विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए वेटलैंड्स के सभी विभिन्न ट्रॉफिक स्तरों के महत्व और भूमिका पर भी प्रकाश डाला और वेटलैंड्स की बहुमूल्य जैव विविधता के संरक्षण के लिए नदी संपर्क, जलीय मैक्रोफाइट्स आदि जैसे महत्वपूर्ण कारकों की जरूरतों पर जोर दिया और मछुआरों से वेटलैंड के संरक्षण और बहाली के लिए सक्रिय रूप से भाग लेने का आग्रह किया ताकि मछली उत्पादन की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित हो सके। श्री

पंकज सरकार, एफईओ एफएफडीए, नादिया ने वेटलैंड पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन की रक्षा के लिए राज्य मत्स्य विभाग, अनुसंधान संस्थान, और मछली किसानों के बीच सहयोगात्मक प्रयास की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न सरकारी विकास योजनाओं के बारे में भी बताया जो वेटलैंड मछुआरों को सहायता प्रदान कर सकती हैं। सुगुना यूनियन फिशरमेन कोऑपरेटिव सोसाइटी, कांतागंज, नादिया के अध्यक्ष श्री पंडब कुमार दास और सचिव श्री राजू दास ने आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के प्रबंधन के लिए विभिन्न मुद्दों और चुनौतियों, विशेष रूप से मानवजनित प्रदूषण पर चर्चा की। डॉ. लियानथुअमलुइया, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. प्रीतिज्योति माझी, वैज्ञानिक, सिफरी ने भी किसानों को स्थिर मछली उत्पादन प्रबंधन रणनीतियों और आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के विकास के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूक किया। कार्यक्रम के दौरान मछुआरों ने वैज्ञानिक-किसान बातचीत सत्र में सक्रिय रूप से भाग लिया। बातचीत सत्र के दौरान, जलीय पर्यावरण और आर्द्रभूमि के मत्स्य प्रबंधन से संबंधित कई मुद्दों के साथ-साथ संभावित शमन उपायों पर चर्चा की गई। पहचानी गई मुख्य समस्या गायेशपुर नगरपालिका के अनुपचारित सीवेज का निर्वहन है, जिससे शैवाल द्वारा हाइपर-यूट्रोफिकेशन होता है, जिससे *गुड़सिया चपरा, नंदूस नंदूस* आदि जैसी अधिकांश छोटी देशी मछलियाँ लुप्त हो रही हैं। कार्यक्रम में सगुना यूनियन फिशरमैन कोऑपरेटिव सोसाइटी, कांतागंज, नादिया से संबंधित वेटलैंड के 100 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया। सिफरी के तकनीकी अधिकारी श्री सुब्रत दास ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

स्थायी मत्स्य पालन और आजीविका के लिए पूर्णिया, बिहार के मछुआरों की क्षमता का निर्माण

पूर्णिया, बिहार के 30 मछली किसानों के लिए 29 जनवरी से 4 फरवरी, 2025 तक "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। राज्य मत्स्य विभाग द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण मछली पालन समुदायों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाना था, उन्हें स्थायी मत्स्य प्रबंधन के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं से लैस करना था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने किया, जिन्होंने मत्स्य प्रबंधन में क्षमता निर्माण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने भाग लेने वाले मछली किसानों को स्थायी आजीविका प्राप्त करने, उत्पादन को अनुकूलित करने, और लाभप्रदता को अधिकतम करने के लिए प्राप्त ज्ञान को लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम को किसानों के बीच ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में अंतर को पाटने के लिए डिज़ाइन किया गया था, जो किसानों की आय को दोगुना करने के व्यापक दृष्टिकोण के साथ संरेखित करता है। प्रशिक्षण में अन्तर्स्थलीय खुले जल की पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन, तलछट और जल रसायन, तालाब प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव और उनका महत्व, बिहार के लिए उपयुक्त जलीय कृषि प्रजातियाँ, सजावटी मत्स्य पालन, मछली चारा प्रबंधन, रोग नियंत्रण, जलीय कृषि कार्यों का आर्थिक मूल्यांकन और निगरानी और प्रबंधन के लिए ड्रोन तकनीक का उपयोग सहित विषयों को शामिल किया गया। प्रतिभागियों को संस्थान की सजावटी हैचरी

इकाइयों और फ़ीड मिल में व्यावहारिक सत्रों के माध्यम से जानकारी दी गई। इन सत्रों में जल गुणवत्ता विश्लेषण, स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके मछली के चारे की तैयारी और उचित उपचारात्मक उपायों के साथ मछली के रोगजनकों की पहचान जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके अलावा, प्रतिभागियों को पूर्वी कोलकाता वेटलैंड, सजावटी मछली बाजार, सजावटी मछली गांव और कुलिया वेटलैंड का क्षेत्र भ्रमण कराया गया, जिससे उन्हें मत्स्य पालन और जलीय कृषि प्रथाओं में मूल्यवान वास्तविक दुनिया की जानकारी मिली। उन्हें आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र का दौरा करने का अवसर भी मिला। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं के बीच उच्च स्तर की संतुष्टि का पता चला, जिन्होंने अपने ज्ञान में महत्वपूर्ण वृद्धि को स्वीकार किया। उन्हें अपने जल क्षेत्रों पर उत्पादकता बढ़ाने के लिए अपने नए अर्जित कौशल को लागू करने और साथी मछुआरों और किसानों के साथ अपनी विशेषज्ञता साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिससे मत्स्य पालन क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान मिला। प्रशिक्षण कार्यक्रम सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। समन्वय का नेतृत्व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अपर्णा रॉय और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. गुंजन कर्नाटक ने किया, जिसमें श्री सुजीत चौधरी (सीटीओ), श्री मनबेंद्र रॉय (टीओ), डॉ. अविषेक साहा (एसटीए) और सुश्री सद्रूपा भौमिक (एसटीए) का तकनीकी सहयोग रहा।

सागर द्वीप में ग्रामीण आदिवासियों की आजीविका में सुधार: एक सतत प्रयास

पश्चिम बंगाल सरकार के सुंदरबन मामलों के मंत्री श्री बंकिम हाजरा ने 9 फरवरी, 2025 को आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास की उपस्थिति में इनपुट वितरण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। भारतीय सुंदरबन लगातार उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के साथ-साथ बड़े पैमाने पर ज्वार-भाटे का सामना करता रहता है।

मानवजनित और प्राकृतिक गड़बड़ी से उत्पन्न होने वाले नियमित जोखिमों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नींव हिल गई है। एससीएसपी और एसटीसी विकास कार्यक्रमों के तहत, सिफरी लगातार ग्रामीण मछली किसानों को अपनी सहायता प्रदान कर रहा है ताकि उन्हें इन कठिन परिस्थितियों से बचाया जा सके और उनकी मछली पालन आजीविका को पुनर्जीवित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रौद्योगिकी इनपुट प्रदान किए जा सके। गंगासागर,

सुंदरबन डेल्टा में ग्रामीण द्वीपों में से एक है; जहाँ गंगा नदी बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए सामुदायिक सशक्तिकरण गतिविधि की योजना बनाई गई। इसका प्राथमिक लक्ष्य अपने घर के पिछवाड़े के तालाबों में मछली पालन करके उनकी आय को बढ़ाना और उन्हें प्रोटीन की खुराक देकर उनकी पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को

मजबूत करने के लिए, सिफरी ने पिछले 12 वर्षों में मछुआरों को अपने घर के पिछवाड़े के वर्षा आधारित जल निकायों में छोटे पैमाने पर अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया है। प्रत्येक घर को सिफरी से मछली के बीज, मछली का चारा, चूना और दवा जैसे मत्स्य पालन इनपुट मिले हैं। सागर सामुदायिक विकास (सीडी) ब्लॉक की 8 ग्राम पंचायतों से संबंधित 240 एसटी महिला मछली किसानों को एसटीसी कार्यक्रम के तहत उनके पिछवाड़े में 0.02 हेक्टेयर से 0.04 हेक्टेयर आकार के तालाब प्रदान किए जाते हैं। गंगासागर में सागर कृष्णनगर स्वामी विवेकानंद युवा सांस्कृतिक सोसायटी के सहयोग से एक जन जागरूकता शिविर भी लगाया गया। मंत्री जी ने आईसीएआर-सिफरी की पहल की प्रशंसा की, जो सुंदरबन क्षेत्र में अपनी तरह की पहली पहल थी और मछली पालन क्षेत्र में बड़ी संख्या में लाभार्थियों की आजीविका को बेहतर बनाने में बहुत मदद की। सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने बताया कि इस पहल से इन व्यापक जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले प्रत्येक मछुआरें को लाभ होगा। इसके अतिरिक्त, उन्होंने बताया कि इससे उनकी आजीविका और आय में सुधार होगा जिससे मछली पालन सहित स्थायी कृषि विधियों के लिए उनके मुनाफे में वृद्धि होगी।

इस अवसर पर दूरदराज के क्षेत्रों में मत्स्य पालन विकास को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, सिफरी ने एफआरपी कार्प हैचरी इकाई प्रदान की है जिसका उद्घाटन भी किया गया। इस पहल का उद्देश्य क्षेत्र में गुणवत्ता वाले मछली बीज की बढ़ती मांग को पूरा करना, स्थायी मछली उत्पादन सुनिश्चित करना और स्थानीय मछुआरों की आजीविका में सुधार करना है।

मत्स्य पालन में जैव सूचना विज्ञान के अनुप्रयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 27 से 31 जनवरी 2025 तक बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, में शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए जैव सूचना विज्ञान उपकरण और पूर्वानुमानित पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन में इसके अनुप्रयोग पर 07 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। न्यूक्लियोम इंफॉर्मेटिक्स के एमडी और सीईओ दुष्यंत सिंह बघेल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और मछली जीनोम को अनुक्रमित और इकट्ठा करने की आवश्यकता पर जोर दिया, जो पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन में आवश्यक है। डॉ. बि. के. दास ने जोर देकर कहा कि पिछले एक दशक में आणविक जैविक डेटा के लिए विश्लेषणात्मक तकनीकों की

उन्नति में बहुत बड़ा प्रयास हुआ है। इसने कई नए एल्गोरिदम को जन्म दिया है जो जैविक घटनाओं, जैसे जीन अभिव्यक्ति और प्रोटीन इंटरैक्शन से जुड़े डेटा से निपटने के लिए विशिष्ट हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में, पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन डेटा के लिए जैव सूचना विज्ञान उपकरणों के साथ-साथ उनकी 'क्रॉसओवर क्षमता' की जानकारी दी गई है। विशेष रूप से, कार्यात्मक पतन की भविष्यवाणी करने के लिए विभिन्न मछली समुदायों में

कार्यात्मक रूप से समकक्ष प्रजातियों की पहचान करने वाले मॉडल के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ओडिशा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय और आईसीएआर-भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के विभिन्न विशेषज्ञों को व्याख्यान देने और जैव सूचना विज्ञान की विभिन्न तकनीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण देने के लिए आमंत्रित किया गया था। प्रतिभागियों को सार्वजनिक डेटाबेस, जीनोम ब्राउज़र, अनुक्रम पुनर्प्राप्ति, फ़ाइल प्रारूप, BLAST विश्लेषण, प्राइमर डिजाइनिंग और एनजीएस और प्रोटीन मॉडलिंग के विशेष संदर्भ के साथ अनुक्रमण प्लेटफार्मों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया था। कार्यशाला में बर्दवान विश्वविद्यालय, भारतीय वन्यजीव संस्थान, सेंचुरियन विश्वविद्यालय, मत्स्य महाविद्यालय, किशनगंज, भारती दासन विश्वविद्यालय, वीर नर्मदा दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय और महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के संकाय, यूजी और पीजी छात्रों, शोधकर्ताओं और संकायों ने भाग लिया। दास, डॉ. वी. कुमार, डॉ. एस. रॉय और एच.जे. चक्रवर्ती ने कार्यशाला का समन्वय किया।

उत्तराखंड के मछली पालकों प्रक्षिशण कार्यक्रम

उत्तराखंड में मीठे पानी के मत्स्य पालन संसाधनों की एक समृद्ध विविधता है, जिसमें मुख्य रूप से तेज़ बहने वाली नदियाँ, ऊँची और नीची प्राकृतिक झीलें, मानव निर्मित जलाशय, तालाब और डिग्गी शामिल हैं। हालाँकि संभावनाएँ बहुत अधिक हैं, लेकिन सीमित मछली बीज उपलब्धता, स्थानीय समुदायों में जागरूकता की कमी और पहाड़ी इलाकों में पहुँच जैसी समस्याएँ उत्तराखंड में मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास में बाधा बन सकती हैं। पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर में 10-14 फरवरी 2024 तक डीओएफ, उत्तराखंड द्वारा प्रायोजित "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया । कार्यक्रम का उद्घाटन 10 फरवरी, 24 को आईसीएआर-सिफरी के प्रभारी निदेशक डॉ. एस. सामंत ने किया। प्रशिक्षण में जल गुणवत्ता प्रबंधन, नर्सरी और तालाब निर्माण, आजीविका बढ़ाने के लिए बाड़े लगाना, प्रेरित प्रजनन, हैचरी प्रबंधन, सजावटी मछली पालन और नवीन मछली पालन तकनीक जैसे आवश्यक विषयों को शामिल किया गया। मछली चारा प्रबंधन, रोग नियंत्रण और अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर सत्र भी आयोजित किए गए। कार्यक्रम में विभिन्न सुविधाओं और क्षेत्र दौरा भी शामिल था, जिससे अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के व्यावहारिक पहलुओं का व्यावहारिक प्रदर्शन

हुआ। प्रशिक्षुओं ने आईसीएआर-सिफरी में रीसर्क्युलेटरी एक्काकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी हैचरी इकाई, गंगा मछली संरक्षण इकाई और मछली चारा मिल का दौरा किया। उन्होंने हालिसहर मछली फार्म और पूर्वी कोलकाता वेटलैंड्स में मछली उत्पादन और खुले जल संसाधनों में प्रबंधन के बारे में अमूल्य जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण का समापन प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करने के साथ हुआ, जिन्होंने कार्यक्रम के प्रति अत्यधिक संतुष्टि व्यक्त की।

मत्स्य विभाग के महाराष्ट्र सरकार के अधिकारियों के लिए जलाशयों में सतत पिंजरा पालन विकास पद्धति के लिए "पिंजरा पालन : अच्छे प्रबंधन अभ्यास" पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

आईसीएआर-सिफरी ने मत्स्य विभाग, महाराष्ट्र सरकार के अधिकारियों के लिए "पिंजरा पालन: अच्छे प्रबंधन अभ्यास" पर पांच दिवसीय (24 से 28 फरवरी, 2025) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया है कार्यक्रम का उद्देश्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों की तकनीकी विशेषज्ञता को बढ़ाना है, उन्हें जलाशयों में सतत पिंजरा पालन पद्धति के विकास को बढ़ावा देने और मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं से लैस करना है। प्रशिक्षण राज्य मत्स्य विभाग, महाराष्ट्र द्वारा प्रायोजित है।

कार्यक्रम का उद्घाटन 24 फरवरी, 2025 को आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने किया, जिन्होंने मत्स्य प्रबंधन में क्षमता निर्माण की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने भाग लेने वाले अधिकारियों को स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने, उत्पादन को अनुकूलित करने और पिंजरा पालन विकास क्षेत्र में लाभप्रदता को अधिकतम करने के लिए अर्जित ज्ञान को लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने शोधकर्ताओं

और राज्य अधिकारियों के बीच ज्ञान के अंतर को पाटने और अनुभव-साझाकरण को बढ़ावा देने के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

ओपन वाटर एक्वाकल्चर प्रोडक्शन मैनेजमेंट डिवीजन के प्रमुख डॉ. अरमान मुजाददी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उम्मीद जताई कि प्रशिक्षण उन्हें पिंजरा पालन विकास पद्धति के लिए सशक्त बनाएगा, जिससे पिंजरे में रहने वाले जलीय जीवों के सतत विकास में योगदान मिलेगा।

महाराष्ट्र सरकार, पुणे डिवीजन के क्षेत्रीय मत्स्य आयुक्त श्री विजय शिखरे ने महाराष्ट्र में पिंजरा पालन विकास पद्धति वाले लोगों के वैज्ञानिक और सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए आईसीएआर-सिफरी के साथ तकनीकी भागीदार के रूप में सहयोग करने की विभाग की इच्छा व्यक्त की।

प्रशिक्षण में व्यापक विषयों को शामिल किया गया है, जिसमें पिंजरा पालन क्षेत्र का अवलोकन, खुले पानी के लिए उपयुक्त पिंजरे का डिजाइन और निर्माण, तलछट और जल रसायन, नियमित प्रबंधन, जैविक समुदाय और उनका महत्व, लाभप्रदता और अपनाने योग्यता के लिए विविध प्रजातियां, मछली फ़ीड निर्माण और फ़ीडिंग प्रबंधन, रोग नियंत्रण और स्वास्थ्य प्रबंधन, पिंजरे का संचालन का आर्थिक मूल्यांकन, प्रभाव आकलन, स्वचालन और खेत की निगरानी और प्रबंधन के लिए एआई का उपयोग आदि शामिल हैं। सैद्धांतिक सत्रों के अलावा, प्रतिभागी पिंजरा पालन विकास पद्धति संचालन और प्रबंधन प्रथाओं के व्यावहारिक प्रदर्शन को प्राप्त करने के लिए क्षेत्र के दौरे में शामिल होंगे। उद्घाटन सत्र का समापन आईसीएआर-सिफरी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ ए. के. दास द्वारा औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ बि. के. दास के मार्गदर्शन में किया जा रहा है डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. डी. के. मीना, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. गुंजन कर्नाटक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. राजू बैठा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. राहुल, वैज्ञानिक पाठ्यक्रम समन्वयक के रूप में शामिल हैं।

दक्षिण 24 परगना में लघु-स्तरीय मत्स्य पालन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण

ग्रामीण आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम, यह संस्थान पिछले 12 वर्षों से दक्षिण 24 परगना में घर के पिछवाड़े स्थित तालाबों में मछली पालन को बढ़ावा दे रहा है। यह देखते हुए कि इन गाँवों में लगभग हर घर में पीने के पानी और मछली पालन दोनों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला तालाब है, इस पहल का उद्देश्य मछली उत्पादन को बढ़ावा देकर आजीविका को बढ़ाना और प्रोटीन सप्लीमेंट के माध्यम से पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है। घर के पिछवाड़े स्थित तालाब में मछली पालन न केवल घरेलू आय बढ़ाता है, बल्कि प्रोटीन

युक्त मछली की खपत के माध्यम से बेहतर पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित करता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए, सिफरी ने मछुआरों को अपने घर के पिछवाड़े स्थित वर्षा आधारित जल निकायों में छोटे पैमाने पर अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया है। संस्थान द्वारा शस्य श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान (आरकेएमवीईआरआई), नरेंद्रपुर के सहयोग से 25 फरवरी 2025 को एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान एससीएसपी कार्यक्रम के तहत 0.02 हेक्टेयर से 0.04 हेक्टेयर के तालाब आकार वाली सोनारपुर ब्लॉक की 4 ग्राम पंचायतों से संबंधित 100 अनुसूचित जाति की महिलाओं को मत्स्य पालन इनपुट वितरित किए गए ताकि घर के पिछवाड़े स्थित तालाब मछली पालन में प्रयोग

हो सके। प्रत्येक लाभार्थी को 6 किलोग्राम मछली बीज और 80 किलोग्राम मछली का चारा दिया गया। स्वामी शिवप्रियानंद जी महाराज, उपाध्यक्ष, एसएसकेवीके ने सभा को संबोधित किया और विभिन्न मत्स्य पालन प्रौद्योगिकी के प्रदर्शन के माध्यम से आजीविका में सुधार करके ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए आईसीएआर-सिफरी की पहल की प्रशंसा की। डॉ बि. के. दास, निदेशक, सोनारपुर में आयोजित कृषि मेले में आईसीएआर-सिफरी को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी स्टाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। शस्य श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान (आरकेएमवीईआरआई) द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम 24-25 फरवरी, 2025 को हुआ। आईसीएआर-सिफरी के स्टॉल पर संस्थान की उपलब्धियों और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया, जिसमें मछली पालकों, छात्रों और उद्यमियों सहित 2500 से अधिक लोग आए।

आईसीएआर के नवनियुक्त सहायकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (मॉड्यूल-II) का आयोजन

आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर में 17/02/2025 से 21/02/2025 तक 10 आईसीएआर संस्थानों के नवनियुक्त सहायकों के लिए 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (मॉड्यूल-II) का आयोजन नोडल संस्थान के रूप में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आईसीएआर के कुल 32 सहायकों ने भाग लिया। डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर इस कार्यक्रम के निदेशक थे और श्री सुबोध नीरज, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, आईसीएआर-आईएआरआई, हजारीबाग और श्री निर्मल सरकार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, आईसीएआर-सिफरी को आईसीएआर द्वारा कार्यक्रम समन्वयक के रूप में नामित किया गया था। आईसीएआर प्रणाली के कुल 12 प्रतिष्ठित प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान व्याख्यान दिए।

भाग लेने वाले संस्थान :

1. आईसीएआर-सिफरी
2. आईसीएआर आरसी ईआर, पटना
3. आईसीएआरआईएबी, रांची
4. लीची पर आईसीएआर-एनआरसी, मुजफ्फरपुर
5. आईसीएआर-एमजीआईएफआरआई, मोतिहारी
6. आईसीएआर-आईएआरआई, हज़ारीबाग
7. आईसीएआर-एनआईएसए, रांची
8. आईसीएआर-क्रिजाफ, बैरकपुर
9. आईसीएआर-निनफेट, कोलकाता
10. आईसीएआर-अटारी, जोन V, कोलकाता

मत्स्य पालन और गंगा नदी की पारिस्थितिकी पर विशेष नदी संवाद का आयोजन

नई दिल्ली में आयोजित 14वें एशियाई मत्स्य पालन और जलीय कृषि फोरम (एएफएएफ) के हिस्से के रूप में, आईसीएआर-सिफरी ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के सहयोग से 13 फरवरी, 2025 को गुलमोहर समिति कक्ष, एनएएएस ब्लॉक, नई दिल्ली में "मत्स्य पालन और गंगा नदी की पारिस्थितिकी पर विशेष नदी संवाद" पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। इस सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के पूर्व महानिदेशक श्री यू.पी. सिंह, आईएएस ने की, जबकि उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता आईसीएआर, नई दिल्ली के मत्स्य पालन के उप महानिदेशक (डीडीजी) डॉ. जे.के. जेना ने की।

आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बी.के. दास ने गणमान्य व्यक्तियों, विशेषज्ञों और विद्वानों का स्वागत किया। उन्होंने एनएमसीजी परियोजना के

तहत पिछले आठ वर्षों में आईसीएआर-सिफरी द्वारा की गई महत्वपूर्ण प्रगति पर प्रकाश डाला, जिसमें मछलियों की आबादी को बहाल करने, मछुआरों के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, मत्स्य पालन के माध्यम से सामुदायिक सशक्तिकरण, जैव विविधता संरक्षण, और नदी पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. जेना ने गंगा नदी के पारिस्थितिकी तंत्र की बहुमुखी चुनौतियों पर जोर दिया और संरक्षण, निगरानी, तत्कालीन प्रथाओं और सहयोगी प्रयासों की वकालत की। उन्होंने मछली प्रजनन की पहचान करने, नदी के किनारे मछुआरों की आजीविका का विश्लेषण करने, और दशकों में जैविक समुदाय में हुए बदलावों पर व्यापक शोध करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. जेना ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सतत संरक्षण कार्यक्रम, मछली अभयारण्यों की स्थापना और मछुआरों, पारिस्थितिकीविदों, जलविज्ञानियों और संरक्षणवादियों के संयुक्त प्रयास नदी प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण हैं उन्होंने आर्द्रभूमि जैव विविधता संरक्षण, पर्यावरणीय प्रवाह, देशी मछली प्रजातियों का संरक्षण, जर्मप्लाज्म संरक्षण, डॉल्फिन संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण और जल गुणवत्ता निगरानी के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को रेखांकित किया। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के निदेशक डॉ सुरेश बाबू ने जैव विविधता के लिए आर्द्रभूमि कनेक्टिविटी और हाइड्रोलॉजिकल व्यवस्थाओं के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने रामगंगा बेसिन का उदाहरण देते हुए भूमि उपयोग में बदलाव, आर्द्रभूमि जलग्रहण क्षेत्र में बदलाव और चेक डैम और बैराज के निर्माण के प्रभावों पर प्रकाश डाला। एनएफडीबी के सीईओ डॉ बी. के. बेहरा ने गंगा में विदेशी मछली प्रजातियों के प्रसार और आनुवंशिक संदूषण से बचने के लिए जंगली पकड़ी गई प्रजातियों को ब्रूडर के रूप में उपयोग करने की आवश्यकता पर चिंता जताई। एनबीएफजीआर के निदेशक डॉ यू. के. सरकार, और आईआईटी दिल्ली के एमेरिटस प्रोफेसर डॉ. ए. के. गोसाईं ने पर्यावरणीय प्रवाह को प्रबंधित करने और प्रजाति-विशिष्ट प्रवाह आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए हाइड्रोलॉजिकल मॉडलिंग की वकालत की। आईआईटी रुड़की के

विजिटिंग प्रोफेसर प्रो. सरद कुमार जैन ने नदियों और आर्द्रभूमि में टिकाऊ मत्स्य पालन के लिए समग्र जल प्रबंधन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने देशी मछलियों की जैव विविधता संरक्षण और धारा पारिस्थितिकी पर भी प्रकाश डाला।

प्रदूषण संबंधी चिंताओं को संबोधित करते हुए, आईसीएआर में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन की एडीजी डॉ. देविका पिल्लई ने नदी के जैविक समुदाय के लिए औद्योगिक अपशिष्टों, एंटीबायोटिक अवशेषों और माइक्रोप्लास्टिक्स से उत्पन्न खतरों पर प्रकाश डाला। सीडब्ल्यूसी के निदेशक डॉ. समीर कुमार शुक्ला और आईएआरआई के प्रोफेसर डॉ. आर. एन. साहू ने मछली मार्ग बनाने और महत्वपूर्ण आवासों की निगरानी के लिए वास्तविक समय के जल सेंसर लगाने में अंतःविषय अनुसंधान की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. बि. के. दास ने एनएमसीजी की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया, जिसमें जर्मप्लाज्म प्रजनन के जरिए 503 लाख आईएमसी स्पॉन का उत्पादन, नदी पशुपालन पहल, आईएमसी पकड़ में वृद्धि और हिल्सा जैसी प्रजातियों के लिए प्रवासी पथ की स्थापना शामिल है। उन्होंने मछली की आबादी बढ़ाने और नदी के पारिस्थितिक संतुलन को सुनिश्चित करने में कार्यक्रम की सफलता पर जोर दिया।

अपने समापन भाषण में, श्री यू.पी. सिंह ने नदी पारिस्थितिकी और जैव विविधता के प्रबंधन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के महत्व पर बल दिया। उन्होंने प्राकृतिक प्रवाह पैटर्न को बहाल करने, प्रदूषण में कमी, आर्द्रभूमि संरक्षण, टिकाऊ मछली पकड़ने की प्रथाओं को बढ़ावा देने और संरक्षण प्रयासों में समुदायों को शामिल करने जैसी रणनीतियों पर प्रकाश डाला। सत्र का समापन आईसीएआर-सिफरी बैरकपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. मीना के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 पर युवा शोधकर्ताओं के लिए नवाचार प्रोत्साहन और प्रेरणा

केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (CIFRI), बैरकपुर, ने राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (NAAS) क्षेत्रीय अध्याय, कोलकाता के साथ मिलकर "राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025" को बड़े उत्साह के साथ सफलतापूर्वक मनाया। इस वर्ष, यह कार्यक्रम "विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना" थीम पर केंद्रित था। सजावटी मछली पालन और घरेलू एक्वेरियम में रुचि को बढ़ावा देकर, संस्थान की पहल का उद्देश्य जलीय जैव विविधता, और पर्यावरणीय स्थिरता के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। आर्मी पब्लिक स्कूल, बैरकपुर के शिक्षकों के साथ 100 से अधिक छात्रों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे यह युवा शिक्षार्थियों के लिए अधिक समावेशी और आकर्षक बन गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, जो हर साल 28 फरवरी को मनाया जाता है, भारतीय भौतिक विज्ञानी सी.वी. रमन द्वारा रमन प्रभाव की खोज का प्रतीक है। इस अभूतपूर्व खोज ने प्रकाशिकी के क्षेत्र में क्रांति ला दी और रमन को 1930 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार मिला, जिससे वे यह प्रतिष्ठित सम्मान पाने वाले पहले भारतीय वैज्ञानिक बन गए। यह दिन वैज्ञानिक अनुसंधान के महत्व और तकनीकी और सामाजिक प्रगति पर इसके प्रभाव की याद दिलाता है। इस तरह के आयोजन युवाओं में सवाल करने, खोज करने और नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित करके उनमें वैज्ञानिक सोच को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाकर, केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी

अनुसंधान संस्थान जैसे संस्थान जिज्ञासा और ज्ञान की संस्कृति के निर्माण में योगदान देते हैं, जिससे देश में वैज्ञानिक प्रगति का एक उज्वल भविष्य सुनिश्चित होता है।

इस कार्यक्रम में छात्रों को वैज्ञानिक जिज्ञासा और शौक के प्रति प्रेरित करने के लिए डिज़ाइन की गई कई इंटरैक्टिव गतिविधियाँ शामिल थीं। डॉ. अर्चना सिन्हा, डॉ. अपर्णा रॉय, और डॉ. सुमन कुमारी ने स्थायी मत्स्य पालन, विभिन्न वैज्ञानिकों के जीवन, एक्वेरियम रखने और युवाओं में अत्यधिक मोबाइल उपयोग को कम करने में इसकी भूमिका के महत्व पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने बच्चों को संबोधित किया। मछली पकड़ने पर एक व्यावहारिक कार्यशाला ने छात्रों को एक्वेरियम स्थापित करने, पानी की गुणवत्ता बनाए रखने, और मछली की प्रजातियों का चयन करने की मूल बातें सीखने में सक्षम बनाया। कार्यक्रम में एक छात्र-बातचीत सत्र भी शामिल था जहाँ आर्मी पब्लिक स्कूल के प्रतिभागियों ने अपने विचार साझा किए कि कैसे आकर्षक शौक अपनाने से अनावश्यक स्क्रीन समय को कम करने में मदद मिल सकती है। इस पहल ने युवा दिमागों को मोबाइल सर्फिंग को सार्थक शौक से बदलने के लिए प्रोत्साहित किया, जो अंततः उनके संज्ञानात्मक विकास और सामाजिक कल्याण में योगदान देता है। प्रत्येक छात्र को सजावटी मछलियों का एक जीवंत सेट मिला, जो प्रकृति से प्रेरित होना सिखाता है। प्रतिभागियों की जबरदस्त प्रतिक्रिया ने सिफरी, बैरकपुर और नास क्षेत्रीय अध्याय, कोलकाता को भविष्य में इसी तरह के आउटरीच कार्यक्रम जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया है। कार्यक्रम का समन्वयन संतान के निदेशक डॉ. बि.के. दास के मार्गदर्शन में डॉ. अपर्णा रॉय, प्रभारी ई एवं टी सेल और डॉ. सुमन कुमारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- जलाशय या मछली टैंक में डीओ के स्तर का पता लगाने, निगरानी करने, और नियंत्रित करने के लिए एक IoT आधारित स्वचालित घुलित ऑक्सीजन (डीओ) निगरानी और प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है। यह प्रणाली जलाशय में डीओ के स्तर को सुधारने के लिए डीओ तनाव की स्थिति में स्वचालित रूप से एरेटर का काम शुरू कर देता है। यह प्रक्रिया मांग के आधार पर उच्च शक्ति वाले एरेटर को संचालित करने के लिए ऊर्जा बचाती है। इसके अलावा, क्लाउड-आधारित एप्लिकेशन तनाव की स्थिति का अलर्ट संदेश फार्म मालिक के मोबाइल पर भेजता है। इस प्रणाली का परीक्षण आंध्र प्रदेश और सुंदरबन में वाणिज्यिक झींगा फार्म और भुवनेश्वर में अनुसंधान तालाबों में किया गया है।
- जनवरी-फरवरी 2025 में महाकुंभ अवधि के दौरान प्रयागराज में गंगा और यमुना नदी की पारिस्थितिकी और जैव विविधता पर अध्ययन से पता चला कि नदियों की विद्युत चालकता बीआईएस की स्वीकार्य सीमा से परे पाई गई। प्रयागराज में यमुना नदी में उच्च टीडीएस मूल्य दर्ज किया गया। नदियों में उच्च टर्बिडिटी मूल्य प्राप्त हुए।
- जनवरी 2025 के दौरान प्रयागराज में गंगा नदी के तट पर मछली की अनुमानित मात्रा 4.97 टन थी, जो दिसंबर 2024 में पकड़ी गई मछली की मात्रा से कम थी। यह महाकुंभ मेला अवधि के दौरान प्रतिबंध के कारण हो सकता है।
- गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों की पांच अलग-अलग खाद्य मछली प्रजातियों जैसे साल्मोस्टोमा फुलो, एस्कुलोसा थोरैकाटा, नोटोप्टेरस नोटोप्टेरस, एरियस एरियस, मिस्टस विट्टाटस की अमीनो एसिड संरचना का मूल्यांकन किया गया।

अन्य कार्यक्रम

- डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, ने 28-29 जनवरी 2025 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड में "हरित काल के लिए सतत परिपत्र आर्थिक रणनीतियों और मत्स्य विकास के लिए वर्तमान पर्यावरणीय मुद्दे" पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, ने 5-6 फरवरी 2025 को बिस्वा बांग्ला कन्वेंशन सेंटर, न्यू टाउन, कोलकाता में बंगाल ग्लोबल बिजनेस समिट (बीजीबीएस) के 8वें संस्करण में 6 फरवरी 2025 को प्राथमिक हितधारकों के साथ सतत मत्स्य प्रबंधन और जलीय कृषि प्रथाओं पर पैनल चर्चा में भाग लिया। भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी) इसके भागीदार संगठन है।
- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 14वें एशियाई मत्स्य पालन और जलीय कृषि फोरम में भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने प्रयागराज के महाकुंभ में महाकुंभ प्रदर्शनी में भाग लिया। स्टॉल में नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत चल रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला गया, जिसका उद्देश्य गंगा नदी और उसके पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण और कायाकल्प करना है।
- डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी , ने 23 फरवरी 2025 को ओडिशा के ब्रह्मपुर स्थित मत्स्य पालन महाविद्यालय में क्षेत्रीय ओयूएटी पूर्व छात्र सम्मेलन में भाग लिया।
- सिफरी ने 12-15 फरवरी, 2025 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित 14वें एशियाई मत्स्य पालन और जलीय कृषि मंच (एएफएएफ) सम्मेलन में व्यापार शो प्रदर्शनी में भाग लिया।
- सिफरी ने 14-16 फरवरी, 2025 के दौरान भुवनेश्वर, ओडिशा में आयोजित द्वितीय मत्स्य प्राणी समावेश, ओडिशा (एमपीएसओ)-2025 में प्रदर्शनी में भाग लिया।
- सिफरी ने 22-26 जनवरी, 2025 के दौरान हेडुआ, कोलकाता, पश्चिम बंगाल में आयोजित आचार्य सत्येंद्रनाथ बोस स्मारक बीज उत्पादन मेला में भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर और मेघालय पावर जनरेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड (एमईपीजीसीएल) के बीच “मुंटडू लेश्का स्टेज-II जल विद्युत परियोजना" में "हिल्सा आवास के मानचित्रण और स्टॉक की पहचान” के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

- आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर और मंदाकिनी जल ऊर्जा प्राइवेट लिमिटेड, देहरादून, उत्तराखंड के बीच "गुप्तकाशी के अपस्ट्रीम मंदाकिनी नदी के ख़राब मौसम में प्रवासी व्यवहार पर विशेष ध्यान देने के साथ मछली विविधता पर जांच" की परामर्श सेवा के लिए एक अल्पकालिक परियोजना के रूप में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

- सिफरी, बैरकपुर और नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (एनटीपीसी) लिमिटेड, लोधी रोड, नई दिल्ली, के बीच परियोजना कार्य सेवा के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए, जो "फरक्का में गंगा नदी में फाइटोप्लांकटन समुदायों के ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन और कार्बन पृथक्करण क्षमता पर एक अध्ययन" के सन्दर्भ में किया गया।

- 2 फरवरी 2025 को कुलिया बील, नादिया, पश्चिम बंगाल में विश्व वेटलैंड दिवस 2025 मनाया। इस अवसर पर वेटलैंड के 70 मछुआरों को जागरूक किया गया।

- "अन्तर्स्थलीय खुले जल में पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य निगरानी और मत्स्य प्रबंधन" पर 20 फरवरी से 12 मार्च, 2025 के दौरान 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर के विभिन्न शोध और शैक्षणिक संस्थानों के वैज्ञानिकों और संकायों सहित 15 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- 04 से 08 फरवरी, 2025 के दौरान डीओएफ अधिकारियों (एएफओ) के लिए ओडिशा प्रायोजित अधिकारियों का प्रशिक्षण सह एक्सपोजर दौरा आयोजित किया, जिसमें 25 जेएफटीए और एसएफटीए ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

- 10 से 14 फरवरी, 2025 के दौरान डीओएफ, उत्तराखंड प्रायोजित किसानों का प्रशिक्षण सह एक्सपोजर दौरा आयोजित किया, जिसमें हरिद्वार, उत्तराखंड के 14 किसानों ने भाग लिया।

- 14 से 20 फरवरी, 2025 के दौरान जिला शेखपुरा, बिहार के 30 मछली किसानों को बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

एक्सपोजर विजिट

- 06 फरवरी, 2025 को जाफरपुर बिद्यार्थी भवन हाई स्कूल के कक्षा IX और X के 15 छात्रों के लिए और 11 फरवरी, 2025 को एलएसपीएन सीओएफ, डीएसवीसी कामधेनु विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ के बी.एफ.एस.सी. द्वितीय वर्ष के 55 छात्रों के लिए एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें छात्रों को संस्थान और अन्तर्स्थलीय खुले पानी के मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक प्रथाओं के बारे में प्रारंभिक उन्मुखीकरण प्रदान किया गया।

- 12 फरवरी, 2025 को महाराष्ट्र पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, सीओएफ के बी.एफ.एससी द्वितीय वर्ष के 27 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें छात्रों को संस्थान की प्रयोगशालाओं में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक तकनीकों से अवगत कराया गया।

- संस्थान ने री-भोई किसान संघ (आरएफयू), मेघालय के साथ मिलकर 30-01-2025 को मेघालय के री-भोई जिले के उमबांग, उमसिंग में संस्थान के टीएसपी कार्यक्रम के तहत एक "जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम" का आयोजन किया। कार्यक्रम में मछली पालकों, एनजीओ अधिकारियों और वैज्ञानिकों सहित 70 (22 महिलाओं सहित) प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अन्य

- आईसीएआर-सिफरी ने गंगा नदी के विभिन्न क्षेत्रों में डॉल्फिन, हिल्सा और महासीर संरक्षण पर 14 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए, जिसमें स्थानीय लोगों और मछुआरों सहित 473 प्रतिभागियों को जागरूक किया गया।

- फरक्का नदी के ऊपरी हिस्से में कुल 8957 हिल्सा वयस्क मछलियाँ पाली गईं, जिनमें से 114 नमूनों को प्रवासी मार्ग को समझने के लिए टैग किया गया। संरक्षण के लिए गंगा नदी के ऊपरी हिस्से में 30,000 हिल्सा अंडे छोड़े गए।

- सिफरी ने 14 फरवरी 2025 को नई दिल्ली स्थित एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड कार्यालय में सिफरी आर्गक्योर प्रौद्योगिकी के लाइसेंस की शर्तों और नियमों पर तकनीकी-व्यावसायिक मूल्यांकन समिति की बैठक आयोजित की।

सिफरी समाचार पत्रों एवं प्रचार माध्यम में

BUSINESS/COMMERCE

River Ranching Initiative by ICAR-CIFRI at Dui Paisa Ghat, Monirampur, Ganga River

Kolkata,(KCN):ICAR-CIFRI conducted a river ranching program at Dui Paisa Ghat, Monirampur on the Ganga River, focusing on enhancing fish populations and maintaining ecological balance. The event was inaugurated by Dr. (Mrs.) B. Meenakumari, former DDG (Fy. Sc.) and Chairman of the Research Advisory Committee (RAC) of ICAR-CIFRI, alongside distinguished RAC members, including Dr. A.K. Singh, former director of ICAR-DCFR, as well as institute divisional heads, scientists, and staff.

Under National Ranching Mission III, 1 lakh 70 thousand fingerlings (50 thousand L. Bata and 1 lakh 20 thousand IMC) have been released into the Ganga River. This program is consistent with ICAR-CIFRI's objective to promote

sustainable fisheries and rehabilitate natural fish populations in inland water bodies. The RAC Chairman highlighted the significance of river ranching in enhancing fishery resources and supporting the livelihoods of the local fishing community. Dr. B. K. Das, Director of ICAR-CIFRI, highlighted the significance of river ranching in the augmentation of inland fisheries resources. He asserted that stock enhancement through ranching is essential for revitalising fish populations in rivers. ICAR-CIFRI has led initiatives that prioritise a scientific methodology for managing fisheries resources. This initiative will benefit local fishers and contribute to the ecological integrity of the Ganga River. ICAR-CIFRI experts emphasised the ecological advantages of these programs, which promote biodiversity conservation and enhance fish productivity. The event witnessed active involvement from local fishermen, stakeholders, and researchers, underscoring ICAR-CIFRI's dedication to the sustainable management of inland fisheries.

...wering Rural Women Through Small-Scale ...ies in South 24 Parganas

enhances household incomes but also ensures better nutritional security through protein-rich fish consumption. In order to ...

programme was organised by the Institute in collaboration with Sasya Shyamala Krishi Vigyan Kendra, ...

were distributed to 100 SC women belonging to 4 GPs of Sonarpur Block having pond size of 0.02 to 0.04 ha under SCSP programme ...

Chairman, SSKVK addressed the gathering and praised the ICAR-CIFRI initiative for empowering rural women by improving livelihood through demonstration of various fisheries technology. Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, Barrackpore, sensitized the gathering on the inland open water fisheries technology ...

...wareness Campaign for Hilsa ...onservation: An ICAR-CIFRI Initiative

...a, (KCN):In a ...ant move towards ...ble fisheries and ...ronmental ...vation, ICAR-... Inland Fisheries ... Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore, ...ed an awareness ... on Hilsa ...ation under the ... Mission for Clean ... (NMCG). The ..., spearheaded by ... Das, Director of ... CIFRI and ... Investigator of ... CG project, saw ...ation from over 80 ..., women, and ... at Chandan Nagar ... Bhadreshwar, ...y. The primary ... of the campaign ... educate local communities on ...able fishing ... and to emphasize ...cological and ...ic importance of ... Fishers were ...ed about ...ible fishing ...ues, including ...ce to seasonal ... bans during

breeding periods, usage of eco-friendly fishing gear, and avoiding the capture of juvenile Hilsa. These measures are essential for ensuring the long-term sustainability of Hilsa populations and securing the livelihoods of fishing communities.

A key highlight of the campaign was the active involvement of women in alternative income-generating activities. Training sessions were conducted on value addition, hygienic fish processing, and aquaculture-based entrepreneurship, equipping them with skills to supplement household incomes sustainably.

The campaign also focused on children, recognizing their role as future stewards of conservation efforts. Through interactive sessions, children were educated on the importance of Hilsa preservation, ensuring that conservation awareness permeates into households and contributes to long-term behavioral change.

The Hilsa Awareness Campaign, through its inclusive approach, reinforces the need for community participation in conservation efforts. By engaging fishers, women, and children, the initiative strengthens the commitment to sustainable Hilsa fisheries, ensuring both environmental protection and economic stability for future generations.

সিফরির উদ্যোগে কুলতলিতে গরিব মহিলা মৎস্যচাষিদের ট্রেনিং

বিশেষ সংবাদদাতা, বাসন্তী : রাজ্যে মিষ্টি জলের মাছ চাষের অন্যতম এলাকা হিসাবে চিহ্নিত সুন্দরবন। এই অঞ্চলের লোকদের জীবিকার অন্যতম উৎস একবার মাত্র ধান চাষ। তাও প্রতিবারে বন্যা, খরা, অতিবৃষ্টি, ঘূর্ণিঝড়ে ফসল ...

সুন্দরবন অঞ্চলে প্রায় ৫ হাজার পরিবারকে ট্রেনিং ও ইনপুট দিয়ে কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থা সাহায্য করেছে। যার ফলে এখানে মাছ চাষে আগ্রহ বাড়ছে।

আইসিএআর- কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা কেন্দ্র, সিফরী-র ৭৯তম প্রতিষ্ঠা দিবস উদযাপন অনুষ্ঠানে সহকারী প্রশাসনিক প্রধান, আইআরডিএম ফ্যাকাল্টি সেন্টার এবং সহ-সভাপতি, বিজ্ঞান উপদেষ্টা কমিটি, শস্য শ্যামলা কৃষি বিজ্ঞান কেন্দ্র, রামকৃষ্ণ মিশন বিবেকানন্দ শিক্ষা ও গবেষণা প্রতিষ্ঠান, আরকেএমভিইআরআই বেলুড় মঠ, হাওড়া, সিএসআইআর-ইন্ডিয়ান ইনস্টিটিউট অব কেমিক্যাল বায়োলজি, কলকাতার ডিরেক্টর অধ্যাপক বিজ্ঞা চাউন, আইসিএআর-কেন্দ্রীয় সামুদ্রিক মৎস্য গবেষণা প্রতিষ্ঠান (সিএমএফআরআই), কোচির প্রাক্তন অধিকর্তা ড. এ গোপালকৃষ্ণন, আইসিএআর-এটিএআরআই, কলকাতার অধিকর্তা ড. প্রদীপ দে, কুলতলি মিলনতীর্থ সোসাইটি, সুন্দরবনের প্রতিষ্ঠাতা ও সভাপতি লোকমান মোল্লা, আইসিএআর-সিফরীর অধিকর্তা ড. বসন্তকুমার দাস। উত্তর ২৪ পরগনার বারাকপুরে সদর কার্যালয়ে।

... আধুনিক প্রযুক্তি ... মাধ্যমে স্বনির্ভর ... বিরের উদ্বোধন ... মার দাস বলেন, ... র্ভর। তা সত্ত্বেও ... ৫ বছর আগে ... াম। আপনারা ... নিক প্রযুক্তির ... ন কখনো সম্ভব ... রা থেকে শুরু করে

গোসাবা পর্যন্ত ৫ হাজার মৎস্যজীবী পরিবারকে আমরা সাহায্য করার চেষ্টা করেছি। আগামী আর্থিক বছরে আরো ১ হাজার পরিবারকে আমরা আমাদের প্রকল্পের অধীনে আনার চেষ্টা করব। কিন্তু আপনাদের কথা দিতে হবে, পুকুরে মাছ চাষ করে মাছ বিক্রি করে ব্যাঙ্কে টাকা জমা করতে হবে। আবার দরকার পড়লে ওই টাকায় মাছ চাষ করতে হবে। মনে রাখতে হবে এটি ধারাবাহিক প্রক্রিয়া। এর মাধ্যমে স্বনির্ভর হওয়া সম্ভব। আমাদের পক্ষে দ্বিতীয় বার সাহায্য করা সম্ভব হবে না।' লোকমান মোল্লা বলেন, 'সুন্দরবনে এক ফসলি চাষের পাশাপাশি বাসিন্দাদের একাংশ মাছ চাষের ওপর নির্ভরশীল। কিন্তু নয়া প্রযুক্তির ট্রেনিং না থাকায় ধান চাষের মতো মাছ চাষও মার খাচ্ছে। ফলে এখানের লোকরা দিশাহারা। বিকল্প কর্মসংস্থানের কোনো পথ নেই।' কেন্দ্রীয় সংস্থার প্রধান বিজ্ঞানী ড. অর্চন কান্তি দাস বলেন, 'আমি বিশ্বাস করি, আমাদের প্রযুক্তি ও ট্রেনিংয়ে মাধ্যমে সুন্দরবনের মা-বোনেরা স্বনির্ভর হবেন।' প্রজেক্ট সায়েন্টিস্ট শ্রেয়া ভট্টাচার্য বলেন, 'একদিকে রঙিন মাছ চাষ অন্যদিকে পুকুরে মিষ্টি জলের মাছ চাষ যদি পদ্ধতিগতভাবে করা যায় তাহলে আগামী দিনে সুন্দরবনের মায়েদের মুখে হাসি ফুটবে।' মহিলা মৎস্যচাষি সান্ত্বনা ভৌমিক, পম্পা নস্কর ও দুর্গা মণ্ডল জানান, 'সিফরি ও কুলতলী মিলন তীর্থ সোসাইটির সহায়তায় আমরা মাছের চারা পোনা, মাছের খাদ্য ও চুন পেয়ে পুকুরে মাছ চাষ করে সারা বছর প্রায় কয়েক হাজার টাকা আয় করেছি।'

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है